भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2669

उत्तर देने की तारीख 09.03.2026

तमिल सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

2669. श्री अरुण नेहरू :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या तमिलनाडु की प्राचीन साहित्यिक विरासत के मद्देनज़र राज्य भर में शास्त्रीय तमिल भाषा केंद्रों के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध कराया गया है;

(ख) संगम साहित्य और ताड़पत्र पांडुलिपियों के व्यापक स्तर पर डिजिटलीकरण में धीमी प्रगति के कारणों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) सांस्कृतिक उत्सव के रूप में 'जल्लीकट्टू' के लिए अवसंरचना, सुरक्षा उपायों और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता के प्रयासों सहित प्रदान की गई विशिष्ट सहायता का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): जी हाँ। पिछले पाँच वर्षों के दौरान शास्त्रीय तमिल भाषा के संवर्धन के लिए आवंटित निधियों (लाख रुपए में) का विवरण इस प्रकार है:

वर्ष	**निधियां (लाख रुपए में)**
2021-22	1200
2022-23	1200
2023-24	1525
2024-25	1430.00
2025-26	1697.00

(ख): ताड़पत्रों की पांडुलिपियां देश भर के मंदिरों, मठों, निजी संग्रहों और विभिन्न संस्थाओं में बिखरी हुई हैं। उनमें से कई अभी भी असूचीबद्ध हैं, और उनकी पहचान, सत्यापन और प्रलेखन के लिए पर्याप्त समय और क्षेत्रीय स्तर पर प्रयासों की आवश्यकता होती है। साथ ही, ताड़पत्रों की पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण के लिए विशिष्ट विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, जिसमें प्रशिक्षित संरक्षक, पांडुलिपि शास्त्री और प्राचीन एवं क्षेत्रीय लिपियों में प्रवीण विद्वान शामिल हैं। ऐसे विशेषज्ञों की उपलब्धता सीमित है। मानकीकृत मेटाडेटा और उचित प्रारंभिक प्रलेखन के अभाव में डिजिटलीकरण से पहले विस्तृत विद्वतापूर्ण जांच की आवश्यकता होती है, जिससे प्रक्रिया और धीमी हो जाती है।

(ग): संस्कृति मंत्रालय द्वारा जल्लीकट्टू के लिए कोई विशिष्ट सहायता प्रदान नहीं की गई है। तथापि, मंत्रालय अपने दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र जैसे स्वायत्त संगठन के माध्यम से क्षेत्र की पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं और विरासत के संरक्षण और प्रचार के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित करता है।

*****